स्वावलंबन का अर्थ है अपने परिश्रम पर जीना। स्वावलंबी व्यक्ति अपनी आवश्यकताएँ अपनी कमाई से पूरी करता है। वह जहाँ तक संभव हो, दूसरों का मुँह नहीं ताकता।

स्वावलंबन की महिमा तो सदा ही रही है, पर आज स्वावलंबन पहले से अधिक जरूरी हो गया है। पहले संयुक्त परिवार में सब लोग मिल-जुलकर रहते थे। एक-दूसरे के सहयोग से सबका काम चल जाता था। चीचें सस्ती थीं। परिवार के एक परिवार विभक्त होते जा रहे हैं। महँगाई आसमान को छू रही है। ऐसी स्थिति में यह जरूरी हो गया है कि प्रत्येक व्यतिक्त अपने पाँवों पर खडा हो और किसी पर बोझ न बने।

स्वावलंबन की एक झलक पर न्योछावर कुबेर का कोष। सचमुच। अपनी मेहनत की कमाई के आगे कुबेर का खजाना भी ठहर नहीं सकता। स्वावलंबन से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढना है और उसके स्वाभिमान की रक्षा होती है। स्वावलंबन हमें जागरुक एवं कर्तव्यनिष्ठ बनाता है। स्वावलंबी व्यक्ति अपना उत्तरदायित्व निभाने में कभी लापरवाही नहीं करता।

परावलंबन पराधिनता का दूसरा नाम है। परावलंबी व्यक्ति दूसरों के भरोसे जीता है।